सत्यमेव जयते
न्यायालय मुख्य आयुक्त दिव्यांगजन
COURT OF THE CHIEF COMMISSIONER FOR PERSONS WITH DISABILITIES (DIVYANGJAN)
दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग/**Department of Empowerment of Persons with Disabilities (Divyangjan)**
सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय/**Ministry of Social Justice & Empowerment**
भारत सरकार/**Government of India**
5वाँ तल, एन.आई.एस.डी. भवन, जी-2, सेक्टर-10, द्वारका, नई दिल्ली-110075; दूरभाष : (011) 20892364
5th Floor, N.I.S.D. Bhawan, G-2, Sector-10, Dwarka, New Delhi-110075; Tel.: (011) 20892364
Email: ccpd@nic.in; Website: www.ccpd.nic.in

मामला संख्या: 14210/1141/2023

प्रकरण में –

डॉ. हेमंत भाई गोयल ⋯ शिकायतकर्ता

बनाम

मुख्य कार्यकारी अधिकारी, ⋯ प्रतिवादी
टाइम्स नाउ भारत

1. शिकायत का सारांश:

1 . 1 डॉ. हेमंत भाई गोयल, जो दिव्यांग अधिकार महासंघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं, ने अपनी शिकायत में कहा कि एक वीडियो जो वर्तमान में सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, मूल रूप से 27.08.2021 को राष्ट्रीय समाचार चैनल टाइम्स नाउ भारत पर प्रसारित किया गया था। चैनल के कार्यक्रम 'सवाल पब्लिक का' में गीतकार श्री मनोज मुन्तशिर ने कहा: "मैं जिंदा हूं क्योंकि मैं बोलता हूं; दुनिया किसी गूंगे की कहानी नहीं कहती।"

1.2 शिकायतकर्ता ने कहा कि इस कथन का स्पष्ट आशय यह है कि जो व्यक्ति बोल सकता है, वह मूक व्यक्ति से श्रेष्ठ है और इस दुनिया में मूक व्यक्ति का कोई दर्जा नहीं है। उन्होंने आरोप लगाया कि श्री मुन्तशिर ने न केवल करोड़ों दिव्यांगजनों का सार्वजनिक रूप से अपमान किया है, बल्कि उन्होंने **दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016** का उल्लंघन भी किया है। उन्होंने ऐसे अपमानजनक शब्दों और कहावतों के उपयोग पर प्रतिबंध लगाने की मांग की।

2. प्रतिवादी को नोटिस जारी करना:

2.1 दिनांक 12.06.2023 को प्रतिवादी को नोटिस जारी किया गया, जिसमें उन्हें दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 की धारा 75 और 77 के तहत 30 दिनों के भीतर इस न्यायालय में अपनी टिप्पणी प्रस्तुत करने का निर्देश दिया गया। इसके अतिरिक्त, दिनांक 14.07.2023 को एक अनुस्मारक भी भेजा गया।

3. प्रतिवादी द्वारा उत्तर प्रस्तुत करना:

3.1 श्री संजय अग्रवाल, जो बेनेट, कोलमैन एंड कंपनी लिमिटेड (BCCL) के अधिकृत प्रतिनिधि

हैं (जो "टाइम्स नाउ नवभारत" नामक हिंदी समाचार चैनल का संचालन करता है), ने दिनांक 24.07.2023 को एक हलफनामा प्रस्तुत किया। इसमें उन्होंने कहा कि यह सामग्री एक लाइव इंटरव्यू से संबंधित थी, जिसमें श्री मनोज मुन्तशिर ने एक सवाल का जवाब देते हुए उक्त टिप्पणी की, जिसका उद्देश्य किसी भी प्रकार से वाणी दिव्यांगों की भावनाओं को ठेस पहुंचाना नहीं था। यह बयान इतिहास के महिमामंडन पर केंद्रित प्रश्न के जवाब में दिया गया था।

3.2 उन्होंने यह भी कहा कि श्री मुन्तशिर के विचार उनके निजी और स्वतंत्र विचार हैं, और चैनल या उसके संपादकीय प्रतिनिधि इन विचारों का समर्थन नहीं करते।

4. शिकायतकर्ता द्वारा प्रत्युत्तर:

4 . 1 दिनांक 27.07.2023 को शिकायतकर्ता को प्रतिवादी का उत्तर ईमेल के माध्यम से भेजा गया, और उन्हें अपना प्रत्युत्तर प्रस्तुत करने का निर्देश दिया गया, किंतु कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ।

5. मामले की वर्तमान स्थिति की जानकारी:

5.1 दोनों पक्षों को दिनांक 09.06.2025 को ईमेल के माध्यम से इस मामले की वर्तमान स्थिति बताने हेतु कहा गया।

6. शिकायतकर्ता की ओर से प्रस्तुतियाँ:

6.1 शिकायतकर्ता ने दिनांक 10.06.2025 को अपना उत्तर प्रस्तुत किया और बताया कि उनकी शिकायत का अब तक समाधान नहीं हुआ है। उन्होंने यह भी अनुरोध किया कि इस मामले से संबंधित नोटिस श्री मनोज मुन्तशिर को भी भेजा जाए।

7 . सुनवाई: दिनांक 08.07.2025 को एक हाइब्रिड मोड (ऑनलाइन/ऑफलाइन) में सुनवाई आयोजित की गई। सुनवाई के दौरान निम्नलिखित पक्षकार/प्रतिनिधि उपस्थित थे:

क्रम	नाम एवं पद	पक्ष	माध्यम
1.	डॉ. हेमंत गोयल	शिकायतकर्ता	ऑनलाइन
2.	अधिवक्ता पवन नारंग व अधिवक्ता हिमांशु सेठी	प्रतिवादी के अधिवक्ता	ऑनलाइन

8. कार्यवाही का विवरण:

8.1 शिकायतकर्ता ने मामले के तथ्य संक्षेप में प्रस्तुत किए और कार्यक्रम 'सवाल पब्लिक का' में श्री मुन्तशिर द्वारा दिए गए बयान पर आपत्ति जताई: "मैं जिंदा हूं क्योंकि मैं बोल रहा हूं, दुनिया किसी गूंगे की कहानी नहीं कहती।" उन्होंने कहा कि इस कथन का तात्पर्य है कि जो व्यक्ति बोल नहीं सकता, उसकी कोई अहमियत नहीं है। 'गूंगा' शब्द को उन्होंने अपमानजनक और अयोग्यता दर्शाने वाला बताया।

8.2 उन्होंने यह भी कहा कि दिव्यांगजन आज हर क्षेत्र में समान प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। ऐसे बयान उन्हें नीचा दिखाने वाले हैं। "गूंगा", "बहरा", "अंधा" जैसे शब्द अब असम्मानजनक माने जाते हैं और उनकी जगह 'दिव्यांग' शब्द को प्राथमिकता दी जाती है।

8.3 प्रतिवादी पक्ष के अधिवक्ताओं ने कहा कि यह बयान एक लाइव डिबेट के दौरान दिया गया था और यह केवल एक दो-पंक्तियों की टिप्पणी थी। चूंकि यह लाइव प्रसारण था, चैनल या एंकर के पास इसे नियंत्रित करने का कोई साधन नहीं था। यह श्री मुन्तशिर का व्यक्तिगत अनुभव था और दिव्यांगों से संबंधित नहीं था।

8.4 प्रतिवादी पक्ष के अधिवक्ता ने ट्रांसक्रिप्ट का अंश पढ़कर सुनाया: "नहीं तब तो खैर मेरे पास आवाज़ नहीं थी, यही है तब न मैं समझता था चीज़ों को। तो जैसा-जैसा मेरे शऊर मैच्योर हुआ है, मेरी सेंसिबिलिटी मैच्योर हुई है तो मुझे लगा कि बोलना पड़ेगा क्योंकि अपनी ज़ाती फायदे के लिए चुप रहना ठीक नहीं है। मैं जिंदा हूं क्योंकि मैं बोल रहा हूं, दुनिया किसी गूंगे की कहानी नहीं कहती।"

8.5 उन्होंने कहा कि ये बातें रूपक और आत्म-परक थीं। चैनल ने कभी इन विचारों को समर्थन नहीं दिया। साथ ही यह भी बताया कि उक्त कथन अब वीडियो से हटा दिया गया है। इसलिए चैनल या एंकर की कोई आपराधिक मंशा (mens rea) नहीं थी।

8.6 प्रतिवादी पक्ष के अधिवक्ताओं ने यह भी स्पष्ट किया कि चैनल के प्रबंधन और संपादकीय विभाग की भूमिकाएं स्वतंत्र होती हैं। सीईओ संपादकीय सामग्री या पैनलिस्ट के चयन को नियंत्रित नहीं करते। यदि यह रिकॉर्डेड प्रोग्राम होता और संपादन के बिना प्रसारित किया जाता, तब जवाबदेही बन सकती थी। यहां ऐसा नहीं है। साथ ही, डिबेट में किसी भी दिव्यांग को न तो शामिल किया गया और न ही उन्हें संबोधित किया गया।

9. टिप्पणियाँ और अनुशंसाएँ:

9.1 न्यायालय शिकायतकर्ता की दिव्यांगजनों की गरिमा को लेकर चिंता की सराहना करता है। न्यायालय का मत है कि यह कथन अनजाने में दिया गया प्रतीत होता है, अतः गंभीर टिप्पणी करने से बचा गया है। फिर भी, प्रतिवादी को सलाह दी जाती है कि वे ऐसे मामलों की पुनरावृत्ति से बचने हेतु उपयुक्त निर्देश जारी करें।

9.2 यह अनुशंसा की जाती है कि चैनल अपने सभी अतिथियों को दिव्यांगजनों से संबंधित विषयों पर बोलते समय संवेदनशीलता और सम्मान बनाए रखने की सलाह दे। इसके लिए चैनल को एक सामान्य दिशा-निर्देश (गाइडलाइन) एक माह के भीतर जारी करनी चाहिए और उसकी एक प्रति इस न्यायालय में भी प्रस्तुत की जाए।

9.3 तदनुसार, मामला निस्तारित किया जाता है।

हस्ताक्षरित/-

(एस. गोविंदराज)
दिव्यांगजन आयुक्त

सत्यमेव जयते
न्यायालय मुख्य आयुक्त दिव्यांगजन
COURT OF THE CHIEF COMMISSIONER FOR PERSONS WITH DISABILITIES (DIVYANGJAN)
दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग/**Department of Empowerment of Persons with Disabilities (Divyangjan)**
सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय/**Ministry of Social Justice & Empowerment**
भारत सरकार/**Government of India**
5वाँ तल, एन.आई.एस.डी. भवन, जी-2, सेक्टर-10, द्वारका, नई दिल्ली-110075; दूरभाष : (011) 20892364
5th Floor, N.I.S.D. Bhawan, G-2, Sector-10, Dwarka, New Delhi-110075; Tel.: (011) 20892364
Email: ccpd@nic.in; Website: www.ccpd.nic.in

Case No: 14210/1141/2023

In the matter of –

Dr. Hemant Bhai Goyal ...Complainant

Versus

The CEO, ...Respondent
Times Now Bharat

1. Gist of the Complaint:

1.1 Dr. Hemant Bhai Goyal, National Vice President of the Divyang Rights Federation, stated in his complaint that a video currently going viral on social media was originally broadcast on the national news channel Times Now Bharat on 27.08.2021. In the channel's program *Sawal Public Ka*, lyricist Shri Manoj Muntashir said, “I am alive because I can speak; the world does not tell the story of a mute person.”

1.2 The Complainant submitted that the clear purport of the dialogue is that a person who can speak is superior to one who is mute, and in this world, a mute person holds no status. The Complainant alleged that Shri Muntashir has not only publicly insulted millions of persons with disabilities (Divyangjan), he has violated the RPwD Act. He requested for a ban on use of such derogatory terms and idioms.

2. Notice issued to the Respondent:

2.1 A Notice dated 12.06.2023 was issued to the Respondent for forwarding their comments within 30 days to this Court u/s 75 & 77 of the Rights of Persons with Disabilities Act, 2016 (hereinafter referred to as “the Act”), and a reminder dated 14.07.2023 was also issued to the Respondent.

3. Reply filed by the Respondent:

3.1 Shri Sanjay Agarwal authorised representative of Bennett, Coleman and Company Ltd. (BCCL), which owns and operates the Hindi News Channel “Times Now Navbharat” and on behalf of officer, directors, editors, anchors etc filed reply on affidavit dated 24.07.2023 and submitted inter-alia that the material/content arose out of a live interview, wherein Shri Manoj Muntashir while answering a question made a statement without any intent to hurt the sentiment of persons with speech disability or was in any manner made to make such kind of comment at the behest of the interviewer whose question was related to glorification of history in Hindi Cinema. He also submitted that the entire debate/interview was in no manner whatsoever connected with and/or related to persons with disabilities.

3.3 He also submitted that Shri Muntashir's views and opinions are his personal and independent views, and the channel or its editorial representatives do not endorse or further them in any manner.

4. Rejoinder filed by the Complainant:

4.1 The Respondent’s reply was forwarded to the complainant vide email dated 27.07.2023 with a direction to submit his rejoinder. However, no response was received from the complainant.

5. Seeking the current status of the case:

5.1 Both parties were asked vide email dated 09.06.2025 to provide the current status of the instant case.

6. Submissions made by the Complainant:

6.1 The Complainant filed his reply dated 10.06.2025 and expressed that his grievance has not been redressed so far. He also requested that the notice for the instant case should also be forwarded to Manoj Muntashir also.

7. Hearing: A hearing in hybrid mode (online/offline) was conducted on **08.07.2025**. The following parties/representatives were present during the hearing:

Sl. No.	Name and Designation of the Party/Representative	Parties	Mode
1.	Dr. Hemant Goyal	Complainant	Online
2.	Adv. Pavan Narang and Adv. Himanshu Sethi	Counsels for Respondent	Online

8. Record of Proceedings:

8.1 The Complainant briefly presented the facts of the case and raised a grievance regarding a program titled *'Sawal Public Ka'*, in which singer Manoj Muntashir made the statement: *"I am alive because I speak; the world does not tell the story of someone who is mute."* The Complainant submitted that this statement implied that individuals who can speak are superior to those who cannot. The term *"Goonga"* used by the singer, referring to persons with speech impairments, was contended to be derogatory and suggested incompetence.

8.2 The Complainant further submitted that Persons with Disabilities are competing equally with non-disabled persons in all areas. The statement made by the singer was demeaning and harmful. It was submitted that terms such as *deaf*, *dumb*, and *blind* have been phased out from general usage due to their offensive nature. The preferred respectful term now used is *'Divyang'*.

8.3 The Counsel for the Respondent submitted that the statement in question was made during a live debate on the news channel, and Mr. Manoj made a brief, two-line comment. Since it was a live broadcast, the channel and the anchor had no control over what was said. It was submitted that it is for the singer to explain the context and intent behind the statement, as the debate was not related to Persons with Disabilities (PwDs). The Respondent contended that, upon review of the program transcript, the singer was referring to his personal experience.

8.4 The Counsel for Respondent read out a portion of the transcript, which reads as:

“Nahi tab toh khair mere paas awaaz nahi thi, yehi hai tab na main samajhta tha cheezo ko. Toh jaisa jaisa mere shaoor mature hua hai, meri sensibility mature hui hai toh mujhe laga ki bolna padega kyuki apni zaati fayde ke liye chup rehna theek nahi hai. Main zinda hun kyuki main bol raha hun, duniya kisi goonge ki kahani nahi kehti.”

8.5 The Counsel for Respondent submitted that these remarks were metaphorical and self-referential. It was further submitted that the channel does not endorse the personal views of panelists, and a disclaimer is issued before or after the program stating the same. The Respondent also informed that the words alleged to be offensive have been removed from the publicly available video. Therefore, there was no intention (mens rea) on the part of the channel or the anchor.

8.6 The Counsel also clarified that in the functioning of media, the roles of management and editorial are independent. The CEO does not control editorial content or the selection of panelists. In a live debate such as this, spontaneous comments may be made. The Counsel argued that if there had been a recorded program where objectionable content was aired without editing, liability might arise. However, in this case, the statement was made during a live exchange. It was further submitted that no Persons with Disabilities were part of the debate, nor were they directly addressed. Hence, the relevant provisions cited by the Complainant are not applicable.

9. Observations and Recommendations:

9.1 The Court appreciates the Complainant’s concern for the dignity of Divyangjan. The Court observes that the statement appears to have been made inadvertently and refrains from making serious remarks. However, the Respondent is advised to take appropriate measures to prevent recurrence by issuing suitable instructions to invitees, employees, and other stakeholders.

9.2 This Court recommends that the Respondent advise all guests appearing on its programs to be sensitive and respectful when speaking about disability-related matters. The Respondent may issue a general guideline to this effect within one month, as part of its social responsibility, so that it may serve as a model for others. A copy of the

said guidelines shall be shared with this Court.

9.3 Accordingly, the matter is disposed of.

Digitally signed by
S Govindaraj
Date: 29-09-2025
14:21:57

(S. Govindaraj)
Commissioner for Persons with Disabilities